”पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का संगीत परक अध्ययन”

(विशेषकर बनारस, मिर्जापुर व जौनपुर के सन्दर्भ में)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा से संगीत में पी0 एच0डी0
उपाधि की पूर्ति हेतु प्रस्तुत

रूपरेखा

2016

निर्देशिका

डॉ. नीतू गुप्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संगीत विभाग

शोधार्थिनी

लीना प्रकाश शाक्या

संगीत विभागाध्यक्षा

प्रो. सुभद्रा कुमारी सत्संगी

कला संकाय प्रमुख

प्रो.रागिनी रॉय

कला संकाय (संगीत विभाग)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा

भूमिका

संगीत मानव विकास क्रम के बढ़ते चरण के साथ–साथ विकसित व समृद्ध होते हुए वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर पाया है। संगीत का प्रारम्भ मानव इतिहास के प्रारम्भ के साथ ही दृष्टिगोचर होता है। मानव ने आदिम सभ्यता से ही भावनाओं के प्रकटीकरण के लिए किसी न किसी रूप में संगीत का सहारा लिया। अपने हर्ष–विषाद, विरह–मिलन, कौतुहल–उल्लास आदि समस्त चेष्टाओं में संगीत किसी न किसी रूप में सहचर बना ही रहा और यही कारण है कि मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संगीत की इस भूमिका ने लोक संगीत का कलेवर धारण किया।

लोक संगीत वह संगीत है, जो अनायास सहज रूप से भावों को व्यक्त कर मानव को सुख–उल्लास, उमंग व प्रसन्नता से भर देता है। लोक संगीत उस निश्छल निर्झरनी के समान है, जो बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के अपना मार्ग प्रशस्त करता है। जिसमें उमंग, उत्साह, लोक– रीति, परम्परा का निर्वाह है। या यूँ कहना चाहिये कि लोक संगीत अपने में समेंटे हुये लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब है।

लोक संगीत की उत्पत्ति लोक उत्पत्ति के साथ हुई अर्थात जब व्यक्ति जन्मा तभी लोक संगीत का आर्विभाव हुआ जिस प्रकार व्यक्ति के जन्मोत्सव पर लोक रंजनकारी गीत या पंक्तियाँ गायी जाती है व अपनी खुशी को प्रदर्शित करने हेतु ढोलक, नाल, नगाड़ा आदि का वादन किया जाता है, वही लोक संगीत का स्वरूप है।

लोकसंगीत को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है –

1 लोकगीत 2 लोकवाद्य 3 लोकनृत्य

लोकगीत काव्य, संस्कृति, रीति–रिवाजो, तौर–तरीकों की धरोहर है। लोकगीतों का मानव जीवन अथवा राष्ट्रीय संस्कृति के साथ अविभाज्य सम्बन्ध है। वास्तव में लोकगीत लोकजीवन का दर्पण हैं, जिसमें जनमानस की समस्त भावनाओं, संवेदनाओं, ईर्ष्या, द्वेष, स्नेह, सम्मान, माधुर्य, कटाक्ष

विरह तथा मिलन का प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है, इसी कारण लोकगीत जन आकांक्षाओं के प्रतीक है।

शोध का विषय चूँकि लोक गीतों से सम्बन्धित है अस्तु लोक गीतों पर चर्चा की जाये तो यह सर्वविदित ही है, कि भारत विभिन्न संस्कृतियों, संस्कारों एवं सभ्यताओं का द्योतक देश है, जिसमें विभिन्न परम्परायें, रीति–रिवाज़ व अपने–अपने पर्व हैं। लोक गीत भी इन्हीं परम्पराओं से गुथे हुए हैं

लोक गीत दो शब्दों का समुच्चय है।

लोक + गीत

"लोक से तात्पर्य"– लोक शब्द का व्युतपत्ति परक अर्थ है, देखने वाला इस अर्थ में लोक शब्द को समस्त जन समुदाय के लिये प्रयुक्त किया गया अतः "लोक" समाज का वह वर्ग जो संस्कार शास्त्रीयता और पाण्डित्य की चेतना एवं अहंकार से शून्य है और एक परम्परा के रूप में जीवित है।

"गीत" शब्द वह शब्द जो केवल गेयता अर्थात गायक का ही भाव बोधन नहीं करता उसका सम्बन्ध काव्यकला से भी है। गीत या गान स्वर और लय के साथ शब्द का योग हो जाता है, जिससे यद्यपि उसका लचीलापन कुछ कम हो जाता है। किन्तु काव्य की विशेषताओं को ग्रहण कर लेने पर गान या गीत की उपयोगिता मानव के लिये बहुत बढ़ जाती है।

लोकगीत के सृजन का श्रेय विशेष रूप से स्त्रियों को है। विरहणी स्त्रियाँ प्रिय विरह में गेय पदों का निर्माण किया करतीं थीं। लोकगीत मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित हैं लोकगीतों में वास्तविकता समाहित होती है। वहीं आडम्बर के लिये कोई स्थान नहीं होता। लोकगीत वे गीत है जिन्हे किसी भी परिचय की आवश्यकता नहीं हुआ करती क्योंकि लोक गीतों में समस्त विश्व परिचय संस्कृति एवं व्यवहार स्वयं ही व्याप्त रहता है।

पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर के अनुसार– देशी संगीत की पृष्ठभूमि ही लोक संगीत है।

डा0 राजेन्द्रप्रसाद के शब्दों में आधुनिक जीवन को सुन्दर बनाने व समृद्ध सम्पन्न बनाने के लिये लोक संगीत सहायक सिद्ध होगा।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है। बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं है।

पैरी ने लिखा कि लोक गीत आदिमानव का उल्लासमय संगीत है। वहीं पाश्चात्य कलाकार **रौल्फ वी विलियम का कथन है,** कि लोकगीत न पुराना होता है और न नया वह तो जंगल के उस वृक्ष के समान है जिसके जड़े तो दूर जमीन में धंसी हुयी है। परन्तु फिर भी निरन्तर नयी नयी डालियां पल्लवित होती है व फूल आते हैं– यथा कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी और महाराष्ट्र से लेकर पश्चिम बंगाल तक भारत वैविद्यय पूर्ण लोक संस्कृतियों से समृद्धशाली है, जहाँ पंजाब का उल्लासपूर्ण लोक संगीत व बिहार का नज़ाकत व कोमलता से भरपूर लोक संगीत है, इसी प्रकार पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक संगीत के अनेक प्रकार मिलते हैं। जब–जब ग्रामीण टोली या महिला समूह के मन में जैसी–जैसी उमंगों उठीं वैसी ही अभिव्यक्ति से लोक गीत बनते चले गये।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः–

- कुमाऊँनी लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्टभूमि का वैदिक परिप्रेक्ष में अध्ययन, दीपा महतोलिया, दिल्ली विश्वविद्यालय 2013.
- गोकुल के प्रमुख लोक नृत्यों एवं लोक गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पारूल गुलाटी, दयालबाग़ विश्वविद्यालय, 2011.
- ढूँढाड़ के लोक गीतों का सांगीतिक विवेचन, अनुसूया पाठक, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर 1998.
- ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, शत्रुघ्न शुक्ल, दिल्ली विश्वविद्यालय 1974.
- भोजपुरी और अवधि लोक गीतों का तुलनात्मक अध्ययन, सिन्हा चौहान, आगरा विश्वविद्यालय।

अध्ययन की आवश्यकताः– लोक गीत जनमानस में रची बसी वह रचना है, जो जन साधारण के उद्‌गारों द्वारा गीत रूप में प्रस्फुटित होती है। जो कि मात्र सामाजिक दृष्टि से ही नही बल्कि समस्त दृष्टिकोण जैसे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आदि दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

किसी भी देश की सभ्यता एवं पहचान लोक गीत में समाहित होती है। अतः यह कहना अनुचित नहीं कि लोकगीत किसी भी स्थान विशेष की संस्कृति की पहचान देते है। लोकगीत जनसमुदाय के मन में उत्पन्न उल्लासमयी भावनाओं को, विरह, मिलन आदि भावनाओं को व्यक्त करते है।

लोकगीत किसी भी भाव की अभिव्यक्ति करने का सशक्त माध्यम है। सर्वेक्षण की दृष्टि से जब शोधार्थिनी द्वारा दृष्टिपात किया गया तब यह पाया कि लोकगीत ऐसा विषय है, जिस पर अवश्य ही अनेकों कार्य किये गये। आज भी किये जा रहे है। परन्तु फिर भी पूर्वी उत्तर प्रदेश कई दृष्टिकोणों से लोकगीत के सन्दर्भ में अछूता रहा है। जैसे पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों को लिपिबद्ध करना उन्हें साधारण रूप से गायन में लाना आदि। चूंकि शोधार्थिनी पूर्वी उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित रही है। वहाँ के संस्कार संस्कृति व भाषा से पूर्ण रूप से परिचित है। इस कारण बचपन से ही पूर्वी लोकगीत के प्रति एक आशक्ति बनी हुई है। पूर्वी उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित होने के कारण व अपनी जन्मभूमि से सम्बन्धित कार्य करने कि इच्छुक व लोकगीतों में रूचि होने के कारण शोधकर्त्री ने प्रस्तुत विषय – **"पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का संगीत परक अध्ययन" (विशेषकर बनारस, मिर्जापुर व जौनपुर के सन्दर्भ में)** को शोध हेतु चयनित किया।

अध्ययन के उददेश्यः–

1. पूर्वी उत्तरप्रदेश की संस्कृति का अध्ययन
2. पूर्वी उत्तर प्रदेश के बनारस मिर्जापुर व जौनपुर क्षेत्र के लोक गीतों में प्रयुक्त भाषा, व्यवहार, वेश–भूषा, साज–सज्जा आदि का अध्ययन।
3. पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीत के प्रकार का अध्ययन।

4 पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्यों का अध्ययन।

5 पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों को लिपिबध्द करना।

विषय परिसीमांकनः– प्रस्तुत शोधकार्य समय एवं कार्य की सीमा को दृष्टिगत करते हुए जिससे शोध कार्य उचित समय के अन्तर्गत पूर्ण किया जा सके शोध प्रबन्ध बनारस, मिर्जापुर व जौनपुर के प्रचलित लोकगीतों तक ही सीमित है।

अध्ययन के स्त्रोत – प्रस्तावित शोध हेतु पुस्तकालयों जैसे दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा कॉलेज लाइब्रेरी, पूर्वांचल यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, संगीत नाटक अकादमी दिल्ली, ललित कला अकादमी दिल्ली से सामग्री खोजकर व इनके अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तक–पुस्तिकाओं, टेप रिकॉर्डर, सी0 डी0, डी0 वी0 डी0, आकाशवाणी, दूरसंचार, इन्टरनेट व लोक कलाकारों से साक्षात्कार करके विषय सम्बन्धी जानकारी को एकत्रित किया जाएगा।

अध्ययन की रूपरेखाः–

- **प्रथम अध्याय** – सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
- **द्वितीय अध्याय** – पूर्वी उत्तर प्रदेश का भौगोलिक, सांस्कृतिक परिवेश।
- **तृतीय अध्याय** – लोकगीत का अर्थ, परिभाषा एवं पूर्वी लोकगीत के प्रकार।
- **चतुर्थ अध्याय** – पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोक वाद्यों का अध्ययन
- **पंचम अध्याय** – पूर्वी लोकसंगीत का शास्त्रीय विवेचन –

    1. साहित्य सम्बन्धी विवेचन
    2. संगीत सम्बन्धी विवेचन।

षष्टम् अध्याय – उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ऋतुकालिन लोक गीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व (उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में) – डॉ0 सुमन
- लोक गीतों में नाद–सौन्दर्य – पुष्पा शर्मा
- हिमाचली लोक गीत मंजूषा – प्रॉ0 चमन लाल गुप्त
- काव्य के रूप – स्वर्गीय गुलाबराय
- लोक संगीत अंक, 1 जनवरी 1966 – आनन्द पाल सिंह